राहुलमाता

(यशोधरा)

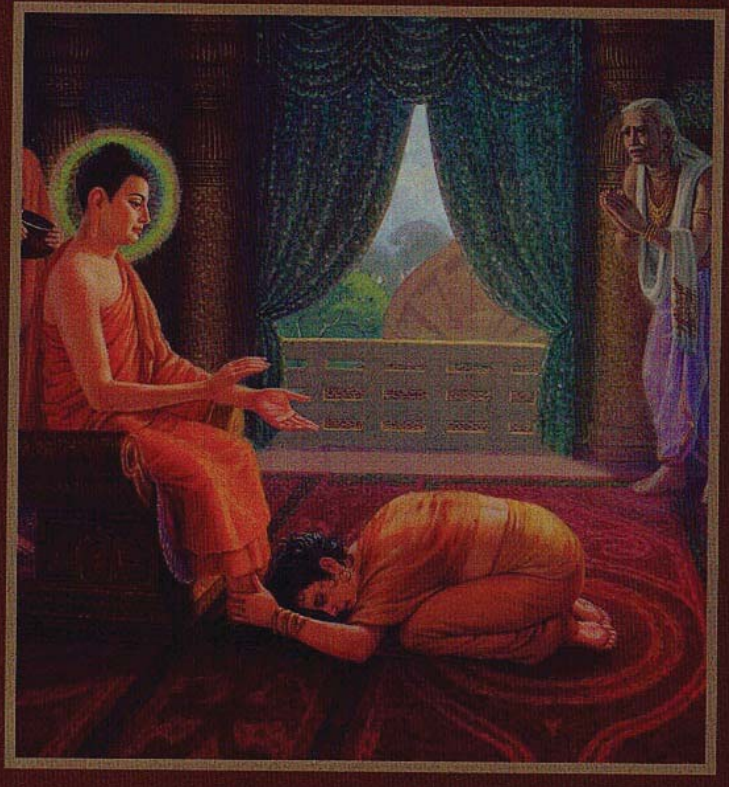

विपश्यना विशोधन विन्यास

राहुलमाता

(यशोधरा)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

राहुलमाता

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [iii]

तापस सुमेध एवं सुमित्रा १
सिद्धार्थ और यशोधरा का जन्म २
सिद्धार्थ और यशोधरा का विवाह ४
चार निमित्त ५
गृह-त्याग ७
बोधिसत्त्व का भव-संसरण समाप्त हुआ १०
अनेकों का मंगल सधा ११
कपिलवस्तु आगमन १२
राहुल को उसके पिता से परिचय कराया १४
धर्मसंगिनी – यशोधरा १६
राहुल को प्रव्रज्या के लिए प्रेरित किया १९
भद्दकच्चाना की प्रव्रज्या २०
महाअभिज्ञावती हुई २१
बोधिसत्त्व व राहुलमाता का भव-संसरण २२
महाराज सुदस्सन एवं महारानी सुभद्दा २२
तृष्णारूपी धन-धान्य-पुत्र-दारा ही असली बंधन . . २६
अनित्यता का प्रकाशन २७
परिनिर्वाण ३०

प्रकाशकीय

पालि साहित्य में यशोधरा का वर्णन प्रमुखतः राहुलमाता, बिम्बादेवी, भद्दकच्चाना के नाम से मिलता है। यत्र-तत्र यशोधरा का वर्णन बिम्बासुन्दरी के रूप में भी मिलता है। ये नाम यशोधरा की विशेषताओं को प्रकट करने वाले विशेषण लगते हैं, जो बाद में उपनाम अथवा नाम बन गये।

यशोधरा नाम स्वयं ही विशेषण लगता है। यशोधरा, जो यश धारण करे। वह बुद्ध जैसे महामानव की जीवनसंगिनी बनी। राहुल जैसे सुपुत्र की मां बनी और राहुलमाता कहलायी। भद्दकच्चाना के रूप में उसने महाअभिज्ञा प्राप्त कर अनेक की मुक्ति में सहायक होकर अपार यश प्राप्त किया। 'भद्दकच्चाना' नाम यशोधरा के उत्तम सुवर्ण वर्ण को लक्षित करता है। प्रव्रज्या ग्रहण करने के पश्चात वह 'भद्दकच्चाना' नाम से ही ज्यादा विख्यात हुई। बिम्बा से तात्पर्य है चंद्रमा की आभा और शीतलता, जो उसके गोरे रंग और शांत स्वभाव को दर्शाते हैं। बिम्बासुन्दरी नाम उसके रूप को और निखार देता है। बिम्बादेवी आदरसूचक लगता है। ये नाम उसके रंग, रूप, गुण, शील, स्वभाव आदि को परिलक्षित करते हैं।

यशोधरा का जन्म कोलियराज्य की राजधानी देवदह में वैसाख पूर्णिमा के दिन हुआ। उसी दिन शाक्यवंशीय कुमार सिद्धार्थ का भी जन्म हुआ। शिशु सिद्धार्थ के शरीर पर महापुरुष के बत्तीस लक्षणों को देखकर ब्राह्मण ऋषि कालदेवल ने यह भविष्यवाणी की कि बालक सिद्धार्थ आगे जाकर सम्यक-संबुद्ध बनेगा।

सोलह वर्ष की अवस्था में यशोधरा का विवाह कुमार सिद्धार्थ के साथ हुआ। राजकुमार के मन में सर्वज्ञता प्राप्त करने की इच्छा दिनों-दिन बलवती हो रही थी जिससे वह जान सके कि प्राणी दुःखों में क्यों तड़पता रहता है और इस दुःखचक्र, भवचक्र से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है। समस्त लोकचक्र से बाहर निकलने का मार्ग ढूंढ़ने के लिए राजकुमार सिद्धार्थ ने चार निमित्तों (जरा, व्याधि, मृत्यु एवं एक तपस्वी) को देखकर घर त्यागने का निश्चय किया।

यशोधरा ने पुत्र राहुल को जन्म दिया। सेवक ने आकर राजकुमार सिद्धार्थ को पुत्र-जन्म की सूचना दी। गृह त्यागने से पूर्व राजकुमार सिद्धार्थ ने सोचा कि एक बार पुत्र राहुल को देख लूं। यशोधरा को एवं पुत्र राहुल को निद्रा अवस्था में देखकर जगाना उचित नहीं समझा। उनके जागने पर गृह त्यागने की योजना विफल हो सकती थी। अतः राजकुमार सिद्धार्थ ने शिशु की एक झलक देखकर यह निर्णय करके गृह त्यागने का निश्चय किया कि जब बोधि प्राप्त कर लूंगा, तभी इसे देखने आऊंगा।

यह सच है कि घर छोड़ते समय उसने यशोधरा को जगा कर सूचित नहीं किया। कारण स्पष्ट था। यशोधरा विलाप करते हुये विरोध न करती, तब भी शिशु राहुल का जाग जाना स्वाभाविक ही था। उसके रोने की आवाज सुन कर महाराज सुद्धोदन और महापजापति गौतमी के जाग जाने की आशंका स्पष्ट थी। ऐसी दशा में गृहत्याग कठिन हो सकता था।

परंतु यशोधरा के लिए सिद्धार्थ के गृहत्याग की घटना अनहोनी नहीं थी। दोनों समवयस्क थे। दोनों ने एक-साथ तेरह वर्ष तक बिना मनमुटाव के सुखी दांपत्य जीवन बिताया था। दोनों एक-दूसरे की मनोवृत्ति को बखूबी समझ रहे थे।

उनतीस वर्ष की उम्र बचकाना नहीं होती। दोनों समझदार थे। गृह त्यागने के गंभीर विषय पर परस्पर बातचीत अवश्य होती रही होगी। राजकुमार सिद्धार्थ चक्रवर्ती सम्राट न बन कर सम्यक-संबुद्ध बनना चाहता था, जिससे कि वह अपने परिवार तथा अन्य अगणित प्राणियों के भवसंसरण के दुःखों से पूर्णतया मुक्त होने में सहायक बन सके।

यशोधरा जैसी सती साध्वी पतिपरायणा गृहिणी के संबंध में नासमझ तथा विरोधी तत्त्वों ने अनेक मनगढंत बातें जोड़-जोड़ कर फैला दीं जिनका उद्देश्य राजकुमार सिद्धार्थ को नितांत निष्ठुर और निर्दयी बताना था। वैसे पति द्वारा त्यागी जाने पर यशोधरा को दुःख हुआ ही नहीं, यह कहना गलत होगा। लेकिन जो अतिरंजना निंदकों ने फैलायी, वह तथ्यहीन है। विशाल तिपिटक साहित्य में सिद्धार्थ के गृह त्यागने पर यशोधरा के विलाप का वर्णन कहीं नहीं है। उसे अपने आराध्य पति के प्रति विपुल श्रद्धा थी, भक्ति थी, विश्वास था।